

टोक्यो में 150 अरब डालर के बाजार में चमकेंगे हस्तशिल्प उत्पाद

ट्रेडिफ और युद्ध की वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए ईपीसीएच ने निर्यातकों को दिखाई नई राह, 29-31 जुलाई को लगेगी प्रदर्शनी

जागरण संबद्धता, मुरादाबाद : ट्रेडिफ और वैश्विक स्तर पर युद्ध की वजह से हुई उधल-पुधल की वजह से ईपीसीएच ने निर्यातकों को नए बाजार की राह दिखाई है। जापान-इंडिया इंडस्ट्री प्रमोशन एसोसिएशन (जेआईआईपीए) की ओर से 29 से 31 जुलाई तक जापान के टोक्यो में इंडिया ट्रेंड फेयर 2026 का आयोजन किया जा रहा है। इसमें भारतीय हस्तशिल्प उत्पाद चमक बिखेरेंगे। निर्यातकों से स्टाल के लिए 25 जून तक आवेदन मांगे गए हैं। यह बाजार करीब 150 अरब डालर का रहता है। जापान दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा फैशन और लाइफस्टाइल बाजार माना जाता है, जहां उच्च गुणवत्ता वाले हस्तनिर्मित, डिजाइन-आधारित और प्रीमियम उत्पादों की मांग लगातार बनी रहती है। ऐसे में मुरादाबाद के धातु शिल्प, सजावटी उपहार वस्तुएं, टेबलवेयर, कैंडल होल्डर और होम एक्सेसरीज के लिए यह बाजार बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

जापान हर वर्ष करीब 700 अरब अमेरिकी डालर मूल्य के उत्पादों और सेवाओं का आयात करता है। वहीं वहां का गिफ्ट बाजार लगभग 150 अरब डालर का है। जापानी संस्कृति में उपहार देने की परंपरा बेहद मजबूत होने के कारण सजावटी वस्तुओं, हस्तशिल्प उत्पादों, फैशन

इंडिया ट्रेंड फेयर-2026



पीतल और अन्य धातुओं से बने उत्पाद •

एक्सेसरीज और प्रीमियम होम डेकोर आइटम की मांग हमेशा बनी रहती है। यही वजह है कि भारतीय उत्पादों के लिए जापान को सबसे संभावनाशील बाजारों में गिना जा रहा है। मुरादाबाद देश का सबसे बड़ा हस्तशिल्प निर्यात क्लस्टर है। यहां से अमेरिका और यूरोप को बड़े पैमाने पर निर्यात होता है, लेकिन अब निर्यातक एशियाई बाजारों में भी अपनी मौजूदगी मजबूत करने की रणनीति बना रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, जापानी खरीदार गुणवत्ता, नवीन डिजाइन, उत्कृष्ट फिनिशिंग और समयबद्ध आपूर्ति को विशेष महत्व देते हैं। मुरादाबाद के उत्पाद इन मानकों पर खरे उतरते हैं, इसलिए यहां के निर्यातकों को नए खरीदार और उच्च मूल्य वाले आर्डर मिलने की संभावना है। इंडिया ट्रेंड फेयर भारतीय कंपनियों को जापान के प्रमुख आयातकों, रिटेल चेन, डिजाइनरों और खरीद एजेंसियों के

ब्रिक्स एमएसएमई फोरम से निर्यात को नई उड़ान

जाली, मुरादाबाद : आगरा में हुए प्रथम ब्रिक्स एमएसएमई फोरम एवं तीसरी एमएसएमई वर्किंग ग्रुप बैठक में भाग लेकर लघु उद्योग भारती ने मुरादाबाद के उद्योगों के लिए वैश्विक व्यापार और सहयोग की नई संभावनाओं का रास्ता खुलने की उम्मीद जताई है।

ब्रिक्स इंडिया-2026 के अंतर्गत आयोजित यह कार्यक्रम लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए निर्माण विषय पर केंद्रित रहा, जिसमें विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने एमएसएमई क्षेत्र को मजबूत बनाने पर विचार विमर्श किया। लघु उद्योग भारती के पदाधिकारियों ने कहा कि पहली बार सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम



ब्रिक्स एमएसएमई सेमिनार के दौरान मुरादाबाद लघु उद्योग भारती के सदस्य •

उद्योगों (एमएसएमई) को इस तरह के उच्चस्तरीय अंतरराष्ट्रीय मंच पर औपचारिक रूप से

आमंत्रित किया गया है। इसे भारतीय एमएसएमई क्षेत्र के वैश्विक एकीकरण की दिशा में

एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है। संगठन ने इसके लिए भारत सरकार का आभार व्यक्त किया। फोरम में लघु उद्योग भारती का प्रतिनिधित्व वरिष्ठ सदस्य राकेश गर्ग, अमित अग्रवाल, दीपक गोयल, गौरव मित्तल और महेश गुप्ता ने बताया कि रूस, केलारूस, मलेशिया, संयुक्त अरब अमीरात, चीन, दक्षिण अफ्रीका, युगांडा, ईरान और ब्राजील समेत कई देशों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। कई देशों की करीब 98 प्रतिशत अर्थव्यवस्था एमएसएमई क्षेत्र पर आधारित है, जो इस क्षेत्र की वैश्विक भूमिका और महत्व को दर्शाता है।

सामने अपने उत्पाद प्रदर्शित करने का अवसर देगा। मेले में हस्तशिल्प, होम फर्निशिंग, फैशन एक्सेसरीज, लेदर उत्पाद, गार्मेंट्स और अन्य वैल्यू-एडेड उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई जाएगी।

ईपीसीएच के चेयरमैन डा. नीरज खन्ना ने बताया कि भाग लेने वाले निर्यातकों के लिए विकास आयुक्त

(हस्तशिल्प), वस्त्र मंत्रालय से वित्तीय सहायता का भी प्रस्ताव भेजा है। नौ वर्गमीटर के स्टाल की मूल लागत 3.60 लाख रुपये निर्धारित की गई है। प्रस्ताव स्वीकृत होने पर प्रतिभागियों को लगभग 2.10 लाख रुपये तक की सहायता मिल सकती है, जिससे भागीदारी लागत काफी कम हो जाएगी। इच्छुक निर्यातकों को

25 जून 2026 तक 1.50 लाख रुपये की अग्रिम राशि के साथ एक्सप्रेशन आफ इंटेरेस्ट (ईओआई) जमा करनी होगी। जापान की राजधानी टोक्यो के शिंजुकु सिटी क्षेत्र में यह प्रदर्शनी लगेगी। वहीं, यंग एंटरप्रेन्योर्स सोसायटी (वाईईएस) के चेयरमैन जेपी सिंह ने कहा जहां अधिकांश भारतीय निर्यातक अमेरिका और यूरोप

पर केंद्रित रहते हैं, वहीं जापान ऐसा बाजार है जो गुणवत्ता, हस्तकला और मौलिक डिजाइन के लिए प्रीमियम मूल्य देने को तैयार है। 150 अरब डालर के गिफ्ट बाजार और 700 अरब डालर के आयात तंत्र के साथ जापान भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के लिए एशिया का सबसे आकर्षक अवसर बनकर उभर रहा है।